पूर्वोदय

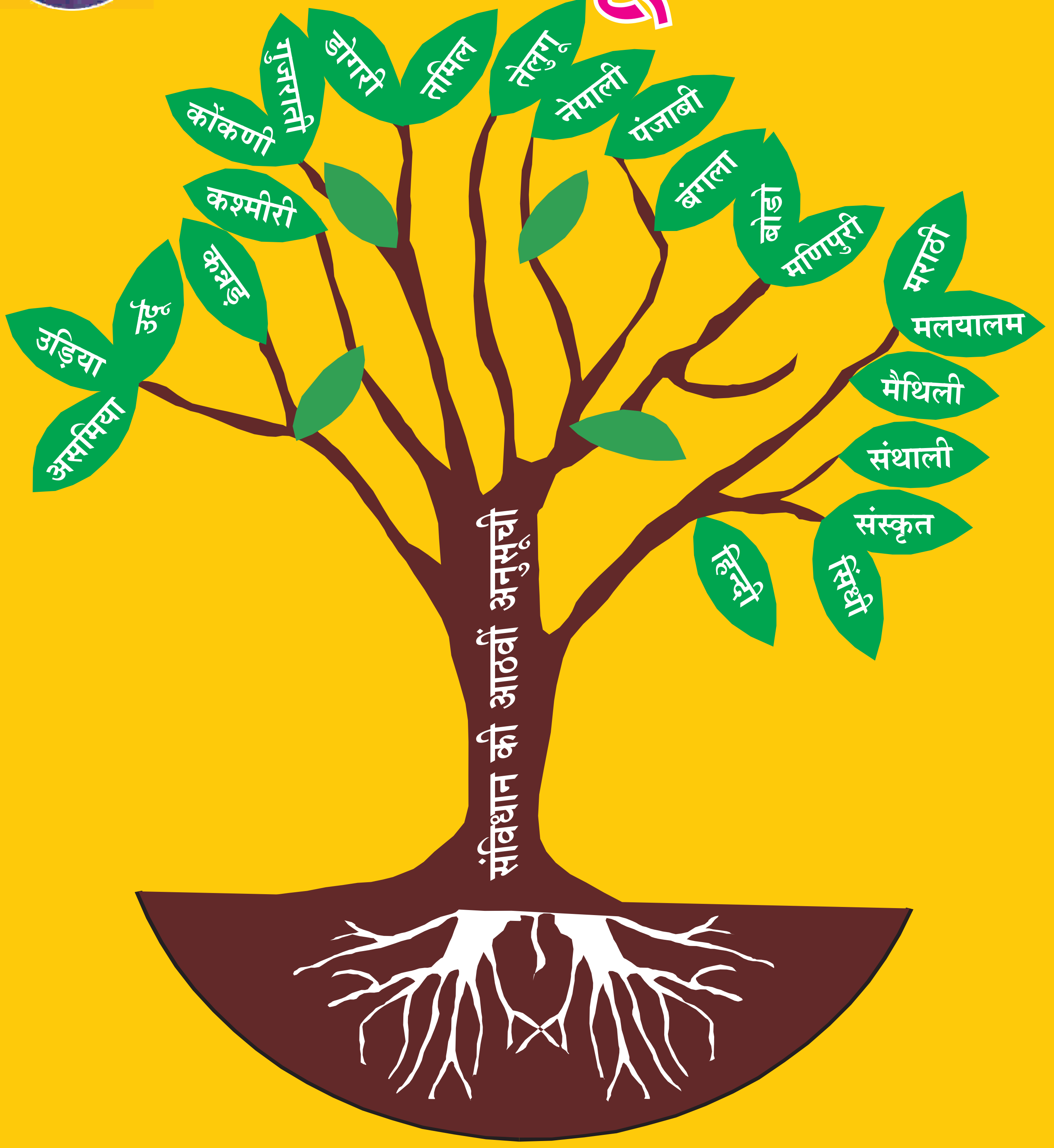

पूर्व रेलवे, प्रधान कार्यालय की त्रैमासिक हिन्दी ई-पत्रिका

अंक : जुलाई-सितंबर, 2015

दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन

दसवाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन मध्य प्रदेश सरकार की भागीदारी के साथ 10-12 सितंबर, 2015 तक भोपाल शहर के लाल परेड मैदान में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन को भारत में आयोजित करने का निर्णय सितंबर 2012 में दक्षिण अफ्रीका के जोहांसबर्ग शहर में आयोजित नौवें विश्व हिन्दी सम्मेलन में लिया गया था।

दसवें विश्व सम्मेलन में समकालीन मुद्दों और विषयों पर विचार-विमर्श किया गया तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, संचार और सूचना प्रौद्योगिकी, प्रशासन और विदेश नीति, विधि, मीडिया आदि के क्षेत्रों में हिंदी के सामान्य प्रयोग और विस्तार से संबंधित तौर-तरीकों पर गंभीर चर्चा की गई। सम्मेलन का मुख्य विषय 'हिंदी जगत : विस्तार एवं सम्भावनाएं' था।

सम्मेलन के आयोजन से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श करने के लिए परामर्शदाता मंडल तथा प्रबंधन और कार्यक्रम से संबंधित समितियाँ गठित की गईं। परामर्शदाता मंडल एवं कार्यक्रम समिति की अध्यक्षा माननीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज थी। प्रबंधन समिति के अध्यक्ष माननीय विदेश राज्य मंत्री जनरल (सेवानिवृत्त) डॉ. वी. के. सिंह थे।

मध्य प्रदेश राज्य सरकार सम्मेलन की स्थानीय आयोजक थी और मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान सम्मेलन के मुख्य संरक्षक थे। भोपाल स्थित माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय इस सम्मेलन की भागीदार संस्था थी।

सम्मेलन स्थल पर दो विशेष प्रदर्शनियाँ लगाई गई थीं जिनमें प्रतिभागियों के अतिरिक्त आम नागरिकों का भी स्वागत था।

एक दैनिक सम्मेलन समाचार पत्र (सम्मेलन समाचार) रिपोर्ट भी प्रकाशित की गई। दैनिक सम्मेलन समाचार का प्रकाशन माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। सम्मेलन-रिपोर्ट के प्रकाशन का दायित्व महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा को सौंपा गया है।

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा प्रकाशित की जानेवाली पत्रिका 'गगनांचल' का एक विशेष अंक निकाला गया जो सम्मेलन को समर्पित था। इसके अतिरिक्त एक सम्मेलन स्मारिका तथा एक पुस्तक 'प्रवासी साहित्य : जोहांसबर्ग से आगे' का भी विशेष रूप से प्रकाशन किया गया है जिनका विमोचन उद्घाटन समारोह में किया गया।

परंपरा के अनुरूप, सम्मेलन के दौरान भारत एवं अन्य देशों से हिंदी के विद्वानों को उनके विशेष योगदान के लिए 'विश्व हिन्दी सम्मान' से सम्मानित किया गया।

दसवाँ विश्व हिंदी सम्मेलन हिन्दी साहित्य की बजाय हिन्दी भाषा पर केंद्रित था। इसमें निम्न विषयों पर चर्चा हुई।

(1) विदेशों में हिन्दी शिक्षण

(2) विदेशियों के लिए भारत में हिन्दी अध्ययन की सुविधाएँ

(3) अन्य भाषाभाषी राज्यों में हिन्दी

(4) विदेश नीति में हिन्दी

(5) प्रशासन में हिन्दी

(6) विज्ञान क्षेत्र में हिन्दी

(7) सूचना और प्रौद्योगिकी में हिन्दी

(8) विधि और न्याय के क्षेत्र में हिन्दी और भारतीय भाषाएँ।

(9) बाल साहित्य में हिन्दी

(10) हिन्दी पत्रकारिता और संचार माध्यमों में भाषा की शुद्धता।

(11) देश और विदेश में हिन्दी प्रकाशन : समस्याएं एवं समाधान

(12) गिरमिटिया देशों में हिन्दी

समापन समारोह में उपरोक्त विषयों पर दी गई अनुशंसाओं की प्रस्तुति की गई जिसे संबंधित विभागों को विचार-विमर्श व कार्रवाई के लिए प्रेषित किया जाएगा।

कार्यक्रम के समापन में हिंदी भाषा और साहित्य के विकास पर बहुत ही मनोरम नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की गई।

कलकत्ते की विरासत : दुर्गापूजा

वीणा गुप्ता
अध्यक्षा,
पू.रे. महिला कल्याण संगठन

बरसों पूर्व रेल अधिकारी के साथ मेरे जीवन की डोर बँधी तो घुमन्तू जीवन के साथ मेरा नाता स्वत: ही जुड़ गया। लम्बे विवाहित जीवन के दौरान एक जगह से दूसरी जगह घूमते-घुमाते वहाँ की संस्कृति, सभ्यता और तीज त्योहारों की छाप मेरे मन पर पड़ती चली गई। मैं देश के किसी भी कोने में रही पर 'दुर्गापूजा' का भव्य स्वरूप हर बार देखने को मिला। जब-जब नवरात्रों के दौरान दुर्गा माँ की प्रतिमा का दर्शन करती, तब-तब मेरा मन इस त्यौहार के पारम्परिक स्वरूप को देखने के लिए मचल उठता।

हीरे के आभूषण जड़ित दुर्गा प्रतिमा

कहते हैं कि जहाँ चाह वहाँ राह। ईश्वर ने भी शिद्दत से जुड़ी मेरी इस मनोकामना को पूरी करने की ठान ली। पति का स्थानांतरण जब कोलकाता हुआ तो उनके साथ मैं भी कोलकाता चली आई। शान्तिनिकेतनी, बालूचरी, भागलपुरी, मुंगेरी तथा रेशम की कारीगरी से बनी खूबसूरत बेल-बूटी से सजी साड़ियों के उद्गम स्थल को आँखों से देखने की तमन्ना के साथ ही दुर्गापूजा को बंगाल की धरती पर अपने पारम्परिक स्वरूप में देखने की तमन्ना भी मेरे दिल में थी।

निजी जिम्मेदारियों से बँधे होने के कारण जब दुर्गापूजा से कुछ सप्ताह पहले मुझे दिल्ली लौटना पड़ा तो लगा यह सपना अभी पूरा नहीं हो पाएगा। मैं इस सपने को भूल अपनी रोज की दिनचर्या में व्यस्त हो चली थी कि अचानक एक दिन पति ने फोन पर बताया कि 'दक्षिणी कोलकाता पूजा पंडाल' को मूल्यांकित करने वाली नई समिति में उन्हें भी चयनित किया गया है। सुनकर मन में दबी आशा एक बार फिर अपना सिर उठाने लगी। कुछ साजन से मिलने की आकांक्षा तो कुछ विशिष्ट व्यक्ति के रूप में दुर्गापूजा पंडाल से जुड़ी हर बारीकी को देखने की ललक ने ऐसा असर दिखाया कि विद्यालय से अवैतनिक अवकाश ले, मैं भागी-भागी दिल्ली से कोलकाता चली आई। सफर की थकान भूल सजी-धजी मैं मोटरगाड़ी में बैठ पंडाल की ओर रवाना हुई तो मेरा मन हवा से भी तेज दौड़ रहा था। एक-एक पंडाल को देख मेरी आँखें फटी की फटी रह गई और साथ ही मेरे सामने पंडाल स्थापना से जुड़ी कार्य-योजना एवं कला श्रेष्ठता का अनूठा संगम प्रस्तुत था।

यक़ीन मानिए पंडाल स्थापना से जुड़ी ऐसी बारीकियाँ मुझे पता चलीं जिनकी कल्पना आप और हम स्वप्न में भी नहीं कर सकते। षष्ठी से आरम्भ होने वाले इस उत्सव की तैयारी कम से कम छ: माह पूर्व शुरू हो जाती है। प्रत्येक पंडाल कला श्रेष्ठता, भक्ति- भावना के साथ कार्य-कुशलता का अद्भुत संयोजन होता है। पंडाल स्थापना से पूर्व ढेरों नियमों का पालन पंडाल स्थापक को करना पड़ता है। आईएसआई चिह्नित बिजली की तारों का इस्तेमाल, अग्निशामक यंत्रों का प्रयोग, सीसीटीवी कैमरों का इस्तेमाल, सरकारी मान्यता प्राप्त ठेकेदारों के कुशल निर्देशन में बिजली का कार्य करवाने की पाबंदी, पंडाल के लिए अग्निरोधक वस्त्र का इस्तेमाल करना ऐसे कड़े तकनीकी मानदंड हैं जिनका पालन करना अनिवार्य होता है। न केवल तकनीकी अपितु मानवीय सुविधाओं को ध्यान रखना भी प्रत्येक पंडाल समिति के लिए आवश्यक होता है। उदाहरण के तौर पर शौचालय व्यवस्था, खान-पान व्यवस्था, प्राथमिक उपचार व्यवस्था, पृथक-पृथक प्रवेश तथा निकास द्वार की व्यवस्था, भीड़ संयोजन के लिए कतार-बद्ध खड़े होने के लिए रस्सी से बने मार्ग की व्यवस्था इत्यादि कुछ ऐसी ही अनिवार्यताएँ हैं जो दुर्गापूजा के विशाल आयोजन को सुव्यवस्थित स्वरूप देते हैं।

इन सबसे परे, प्रत्येक पंडाल किसी थीम को पालन करके विशिष्टता प्राप्त करने की चेष्टा करता है और

सोने के आभूषण जड़ित दुर्गा प्रतिमा

(और शेष पृष्ठ 5 पर)

हमारी उपलब्धियाँ

श्री सुरेश प्रभाकर प्रभु, माननीय रेलमंत्री ने दिनांक 06.06.2015 को बी. सी. राय प्रेक्षागृह, सियालदह में आयोजित एक समारोह में कई रेल परियोजनाओं का उद्घाटन किया, विभिन्न सेक्शनों में दोहरी लाइन समर्पित एवं चार नई ईएमयू सेवाओं को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। बाद में, उसी स्थल पर माननीय रेल मंत्री ने मीडिया कॉन्फ्रेंस को संबोधित किया।

हावड़ा स्टेशन पर निःशुल्क वाई-फाई एवं अन्य सुविधाएँ -

उन्होंने निम्नलिखित सुख-सुविधाओं का भी 06.06.2015 को उद्घाटन किया -

सियालदह स्टेशन पर यात्री सूचना प्रणाली के लिए ट्रू कल डिस्प्ले बोर्ड

हावड़ा स्टेशन पर निःशुल्क वाई-फाई

कांचरापाड़ा में खेलकूद कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन -

श्री मनोज सिन्हा, माननीय रेल राज्य मंत्री ने 04.06.2015 को जसीडीह स्टेशन पर आयोजित एक समारोह में मल्टी फंक्शनल कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन किया एवं आस-पास के क्षेत्र के विकास की आधारशिला रखी। श्री सिन्हा ने शिकारीपाड़ा-पिनारगरिया नई लाइन का उद्घाटन भी किया, रामपुरहाट-जसीडीह रेल लिंक को पूरा करने के लिए दुमका-शिकारीपाड़ा नई लाइन समर्पित की तथा दुमका स्टेशन पर आयोजित एक समारोह में दुमका-रामपुरहाट पैसेन्जर सेवा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर माननीय सांसद श्री शिबू सोरेन एवं निशिकांत दुबे भी उपस्थित थे।

लोक लेखा समिति का दौरा

माननीय सांसद प्रोफेसर के. वी. टॉमस की अध्यक्षता में लोक लेखा समिति (2015-16) का 11.06.15 को कोलकाता में आगमन हुआ और लौह अयस्क यातायात हेतु दोहरी मालभाड़ा नीति एवं भारतीय रेल में तत्काल व अग्रिम आरक्षण के निष्पादन लेखा-परीक्षा विषय पर पूर्व रेलवे तथा दक्षिण पूर्व रेलवे के साथ विचार-विमर्श किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस दिनांक 21.06.2015 को बड़े उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस कार्यक्रम में व्यक्ति विकास केन्द्र, कोलकाता, केंद्र के सुप्रसिद्ध योग शिक्षक के मार्गदर्शन में काफी संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने योगाभ्यास किया।

अंतर्राष्ट्रीय समपार दिवस

दिनांक 03.06.2015 को सम्पूर्ण पूर्व रेलवे में अत्यधिक उत्साहपूर्वक अंतर्राष्ट्रीय समपार दिवस मनाया गया। इस अवसर पर यात्रियों के बीच समपार फाटकों पर बरती जानेवाली सावधानियों से संबंधित पर्चे वितरित किए गए। समपार फाटकों पर यात्रियों को जिन बातों का ध्यान रखना चाहिए उन विषयों पर आधारित नुक्कड़ नाटकों का भी प्रदर्शन किया गया जिससे यात्रियों में जागरूकता बढ़ायी जा सके।

विशेष स्वच्छता अभियान

विगत जून, 2015 में 22 से 26 तारीख तक सम्पूर्ण पूर्व रेलवे में एक विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस अभियान का उद्देश्य रेलकर्मियों के बीच कार्य-संस्कृति में सुधार लाना तथा कार्य स्थल पर साफ-सफाई द्वारा काम के लिए स्वास्थ्यकर वातावरण तैयार करके 'स्वच्छ भारत मिशन' को आगे बढ़ाना था।

बी. आर. सिंह अस्पताल में स्पाइरल सी टी स्कैन मशीन

अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड श्री ए. के. मित्तल द्वारा जुलाई, 2015 में सियालदह स्थित बी. आर. सिंह अस्पताल में एक नए स्पाइरल सी टी स्कैन मशीन का उद्घाटन किया गया। इसी के साथ-साथ उन्होंने मरीजों को एस एम एस तथा ई-मेल के द्वारा पैथालॉजिकल रिपोर्ट भेजने हेतु एक प्रणाली का भी शुभारंभ किया।

इम्प्लाइज ग्रीवान्स रिड्रेसल सिस्टम

पूर्व रेलवे में कर्मचारियों की शिकायतों/व्यथा को निपटाने के लिए एक ऑन-लाइन प्रणाली प्रारंभ की गई है जिसे इम्प्लायज ग्रीवान्स रिड्रेसल सिस्टम (ई जी आर एस) कहा जाता है। अब कोई भी कर्मचारी अपनी शिकायतें ऑन लाइन भेजकर उनका समाधान प्राप्त कर सकता है। इसी के साथ-साथ हमारे रेल मंत्री की पहल से पूर्व रेलवे में कार्यरत कर्मचारियों को उनके जन्म दिन पर शुभकामना संदेश प्रेषित किए जा रहे हैं। माननीय रेल मंत्री के इस अभिनव पहल से प्रत्येक रेल कर्मचारी चाहे

वह जिस भी पद पर कार्यरत है, स्वयं को सम्मानित एवं गौरवान्वित महसूस कर रहा है।

आईएसओ 9001-2008 (गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली) प्रमाण-पत्र

मालदा मंडल के साहिबगंज में कार्यरत दुर्घटना राहत गाड़ी (ए आर टी) को आईएसओ 9001-2008 (गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली) प्रमाण-पत्र से सम्मानित किया गया है। यह प्रमाण-पत्र साहिबगंज की दुर्घटना राहत गाड़ी को उसके परिचालन, रख-रखाव एवं प्रबंधन के लिए प्रदान किया गया है। पूर्व रेलवे में किसी दुर्घटना राहत गाड़ी को इस प्रमाण-पत्र से नवाजा जाना अपने-आप में प्रथम बार है। इसके परिणामस्वरूप इस गाड़ी में कार्यरत आपदा प्रबंधन दल के कर्मियों में नए उत्साह का संचार हुआ है।

69वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह

पूर्व रेलवे मुख्यालय में 15 अगस्त, 2015 को अति उत्साह के साथ 69वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया गया। बड़ी संख्या में उपस्थित इस रेलवे के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच हमारे महाप्रबंधक महोदय श्री आर. के. गुप्ता द्वारा राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया गया। सुरक्षा बल की टुकड़ी द्वारा राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी गई।

पूर्व रेलवे में 'आर-मित्र' का शुभारंभ

पूर्व रेलवे मुख्यालय में दिनांक 21.08.2015 को अपने आगमन पर माननीय रेल मंत्री ने 'आर-मित्र' (रेलवे मोबाइल इंस्टेंट ट्रैकिंग रिस्पान्स एंड असिस्टेंस) नामक एक मोबाइल एप्लीकेशन का शुभारंभ किया। इस मोबाइल एप्लीकेशन की सहायता से गाड़ियों में यात्रियों, विशेषकर पूर्व रेलवे की उपनगरीय गाड़ियों में यात्रा करनेवाली महिला यात्रियों, की सुरक्षा में सुधार लाया जा सकता है।

सद्भावना दिवस

देश के दिवंगत प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी की जन्म तिथि 20 अगस्त को सद्भावना दिवस के रूप में मनाया जाता है। पूर्व रेलवे के फेयरली प्लेस स्थित मुख्यालय में भी दिनांक 20.08.2015 को सद्भावना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुख्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा राष्ट्रीय एकता तथा सभी धर्मों, भाषाओं और क्षेत्रों के लोगों के बीच साम्प्रदायिक सद्भावना को बढ़ावा देने के लिए 'सद्भावना प्रतिज्ञा' दुहरायी गई। इसी क्रम में दिनांक 20.08.2015 से 04.09.2015 तक साम्प्रदायिक सद्भावना पखवाड़ा भी मनाया गया।

पूर्व भारत में रेलों की शुरूआत की 161वीं वर्षगाँठ

सन् 1854 में 15 अगस्त को हावड़ा से हुगली तक रेल गाड़ी का प्रथम बार परिचालन किया गया था। पूर्वी भारत में इस प्रथम रेल गाड़ी के परिचालन का यह 161वाँ वर्षगाँठ है। इसी यादगार दिवस के स्मरण में पूर्व रेलवे के हावड़ा स्थित क्षेत्रीय रेल संग्रहालय में रेल विरासत समारोह आयोजित किया गया।

बेलुड़ और बेलुड़ मठ स्टेशन पर स्वच्छता श्रमदान

'स्वच्छ रेल स्वच्छ भारत अभियान' की भावना को आगे बढ़ाते हुए श्री रामकृष्ण मिशन, बेलुड़ मठ द्वारा बेलुड़ तथा बेलुड़ मठ स्टेशनों पर दिनांक 20.08.2015 से क्रमशः दो एवं चार दिवसीय स्वेच्छया स्वच्छता श्रमदान का आयोजन किया गया।

कलकत्ते की विरासत...

(पृष्ठ 3 का शेषांश)

उसी थीम को देखने के आकर्षण में बँधा हर कोलकातावासी घण्टों कतार में खड़ा रहता है। सन 2014 में हीरे जड़ित दुर्गापूजा पंडाल, स्वर्णनिर्मित पूजा पंडाल कुछ ऐसे आकर्षण थे जहाँ लाखों कोलकातावासियों को माँ के दर्शन की अभिलाषा में खड़े अपने धैर्य एवं भक्ति का परिचय देते हुए मैंने स्वयं अपनी आँखों से देखा है।

बंगाल से जुड़ी दुर्गापूजा में भक्तिभावना से संचालित हजारों स्वैच्छिक कार्यकर्ता एवं लाखों दर्शक शामिल होते हैं। शायद यही कारण है कि संसार के किसी भी कोने में रहनेवाला बंगाली 'शुभो बिजया' कहने के आकर्षण में बँधा अपने घर-परिवार से जुड़ने की आस लिए कोलकाता का रुख करता है। सिन्दूर खेला के साथ नम आँखों से दुर्गा माँ की अन्तिम विदाई करके, अगले साल दुर्गापूजा के अवसर पर परिवारजनों से मिलने तथा भक्ति-भाव से दुर्गा माँ का आशीर्वाद लेने की तमन्ना लिए, हर बंगाली जीविकोपार्जन के लिए निर्धारित फिर से अपने गन्तव्य स्थल की ओर रवाना हो जाता है।

दुर्गापूजा के इस अद्भुत अनुभव के पश्चात जहाँ एक ओर मेरा मन विस्मित था वहीं दूसरी ओर मेरी आँखें यह सोचकर भींगी हुई थीं कि काश हर समुदाय और हर प्रान्त में एक ऐसा सामुदायिक उत्सव होता जिसकी डोर देश- विदेश में बसे भारतीयों को अपने घरौंदों की ओर खींच पाती। इससे जहाँ सन्तान के सान्निध्य को तरसते जन्मदाताओं को तृप्ति और सुख मिलता, वहीं भावी पीढ़ी को भी अपनी संस्कृति से रू-ब-रू होने का मौका मिलता।

राष्ट्रभाषा हिन्दी का महत्व

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी है। राष्ट्रभाषा मनुष्य की पहचान होती है। मनुष्य जब भी अपने देश के बाहर जाता है, वह राष्ट्रभाषा के द्वारा ही जाना जाता है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा इसीलिए दिया गया है क्योंकि यहाँ के अधिकांश लोग इसे समझ सकते हैं, बोल सकते हैं और इसके माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान कर सकते हैं। आज लगभग 45 करोड़ भारतीय हिंदी जानते, समझते और बोलते हैं। हिंदी समझने वालों की संख्या इससे अधिक है। इन सबके बावजूद हिंदी का वह महत्व अपने देश में नहीं है जो होना चाहिए। इसका सबसे बड़ा कारण है- अंग्रेजी मानसिकता। भारत के लोग आजादी के 68 वर्ष बाद भी अंग्रेजी के गुलाम हैं। उन्हें अंग्रेजी सभ्यता-संस्कृति अच्छी लगती है। यहाँ के लोग अंग्रेजी बोलकर स्वयं को ऊँचा समझते हैं। हिंदी की पत्र-पत्रिकाएं भी अंग्रेजी की पत्र-पत्रिकाओं की तुलना में कमतर दिखती हैं। हिंदी के पाठक भी इसके लिए दोषी हैं। वे अच्छे साहित्य को खरीदने में रूचि नहीं लेते। हालाँकि भारत सरकार ने अपने आदेशों में हिंदी के विकास, प्रचार और प्रसार का प्रयत्न किया है। अन्य भाषाओं के श्रेष्ठ ज्ञान को हिंदी में अनूदित करने का प्रयास भी किया गया है। बैंक, डाकतार तथा सरकारी काम-काज में हिंदी को बढ़ावा देने की कोशिश की गई है। पर फिर भी, सरकारी प्रयत्नों के बावजूद हिंदी उपेक्षा की शिकार है। आज भी अंग्रेजी बोलना, अंग्रेजी में नाम लिखना, हस्ताक्षर करना, निमंत्रण-पत्र छपवाना गौरव का चिन्ह माना जाता है। जिस हिंदी भाषा पर हमें गर्व होना चाहिए उसे 'बढ़ावा' देना पड़ रहा है। हर वर्ष सितंबर माह की 14 तारीख को हिंदी दिवस और समस्त सितंबर माह में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया जाता है जिसमें भाषण, वाद-विवाद जैसी प्रतियोगिताएँ व साहित्यिक चर्चाएँ होती हैं। इस समारोह को बहुत हर्ष व उल्लास के साथ मनाया जाता है। पर इसके पीछे एक कटु प्रश्न यह उठता है कि क्या हमारी हिंदी का स्तर-सम्मान इतना घट गया है कि इसके उत्थान के लिए खास तौर से हिंदी पखवाड़ा जैसे समारोह का आयोजन करने की जरूरत पड़ गई?

यदि भारतीयों के हिसाब से अपनी राष्ट्रभाषा बोलने वाला व इससे प्रेम करने वाला हर व्यक्ति पिछड़ा व गँवार है, तब तो अंग्रेज भी गँवार ही ठहरे क्योंकि अपनी राष्ट्रभाषा बोलने में वे हिचकिचाते नहीं, अपनी राष्ट्रभाषा का सम्मान करते हैं। जहाँ हम अपनी राष्ट्रभाषा बोलने में हीनता और शर्म महसूस करते हैं वहीं अंग्रेजों को अपनी राष्ट्रभाषा पर गर्व है।

काश, वह दिन जल्द आए जब हमारे देशवासी अपनी मातृभाषा बोलने में गौरव महसूस करें, जब हिंदी के प्रति उनमें सम्मान की भावना जगे व हिंदी भाषा अपना खोया हुआ महत्व वापस पा सके।

सुकन्या शर्मा

ग़ज़ल

दुष्यंत कुमार

इस नदी की धार में ठंडी हवा आती तो है
नाव जर्जर ही सही, लहरों से टकराती तो है
एक चिनगारी कहीं से ढूँढ लाओ दोस्तों
इस दिए में तेल से भीगी हुई बाती तो है
एक खंडहर के हृदय–सी, एक जंगली फूल–सी
आदमी की पीर गूंगी ही सही, गाती तो है
एक चादर साँझ ने सारे नगर पर डाल दी
यह अँधेरे की सड़क उस भोर तक जाती तो है
निर्वसन मैदान में लेटी हुई है जो नदी
पत्थरों से, ओट में जा–जाके बतियाती तो है
दुख नहीं कोई कि अब उपलब्धियों के नाम पर
और कुछ हो या न हो, आकाश–सी छाती तो है

अंग्रेज़ी यहाँ दासी या अतिथि के रूप में रह सकती है, बहूरानी के रूप में नहीं।
- फ़ादर कामिल बुल्के

राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

राजभाषा संबंधी गतिविधियाँ

हिन्दी में तकनीकी संगोष्ठी - दिनांक 24.06.2015 को महाप्रबंधक एवं सभी विभागाध्यक्षों की उपस्थिति में सुरक्षा विभाग के उप महानिरीक्षक श्री सुरेश सैनी ने *आत्मरक्षा का अधिकार* पर पावर प्वाइंट प्रस्तुति के साथ व्याख्यान दिया। विभिन्न परिस्थितियों में स्वयं की रक्षा करने के क्रम में व्यक्ति किन अधिकारों का प्रयोग कर सकता है और उसकी सीमाएं क्या हैं- इस पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला गया।

- **हिन्दी कार्यशाला -** 27.08.2015 को पूर्व रेलवे मुख्यालय में अधिकारियों के लिए एक पूर्णदिवसीय उच्चस्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम राजभाषा नीति एवं कंप्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग पर विशेष रूप से केंद्रित था। अधिकारियों को लैपटाप के साथ कार्यक्रम में आने का सुझाव दिया गया था ताकि वे कार्यशाला के दौरान ही कंप्यूटर पर हिन्दी के अनुप्रयोग का अभ्यास कर सकें। गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग के उप निदेशक श्री आर.एन. सरोज ने भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रमुख तत्वों से अधिकारियों को अवगत कराया जबकि इंडियन बैंक के मुख्य प्रबंधक श्री वीरेन्द्र राय ने कंप्यूटर पर हिन्दी के प्रयोग एवं इंटरनेट में हिन्दी संबंधी सुविधाओं की उपलब्धता पर प्रकाश डाला।

राजभाषा जागरूकता पखवाड़ा 2015

राजभाषा प्रदर्शनी - दिनांक 16.09.2015 को पूर्व रेलवे मुख्यालय में राजभाषा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न विभागों ने अपनी-अपनी राजभाषा संबंधी क्रिया-कलापों, दस्तावेजों तथा उपलब्धियों का प्रदर्शन किया। महाप्रबंधक ने बड़ी रूचि एवं ध्यानपूर्वक इस प्रदर्शनी को देखा एवं सराहा। यह प्रदर्शनी मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य बिजली इंजीनियर श्री अनिल कुमार गुप्त की प्रेरणा से आयोजित की गई थी।

- **उद्घाटन -** राजभाषा जागरूकता पखवाड़ा का विधिवत उद्घाटन करते हुए अपर महाप्रबंधक ने माननीय रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभु का *हिन्दी दिवस संदेश* का वाचन किया। तत्पश्चात् पूर्व रेलवे के महाप्रबंधक श्री आर. के. गुप्ता ने हिन्दी दिवस-2015 के उपलक्ष्य में अपना संदेश उपस्थित सभी गणमान्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रेषित किया।

- **प्रश्नमंच -** उद्घाटन के पश्चात् अधिकारियों के लिए प्रश्नमंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें महाप्रबंधक, अपर महाप्रबंधक समेत उपस्थित सभी विभागाध्यक्षों ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को कुल 4 समूहों में वर्गीकृत करके उनके बीच प्रतियोगिता कराई गई। जीतनेवाले समूहों को महाप्रबंधक ने पुरस्कार प्रदान किए। कार्यक्रम का संचालन उप महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. वरुण कुमार ने किया।

- **हिन्दी निबंध, टिप्पण-प्रारूपण, वाक्, काव्य पाठ, प्रश्नोत्तरी एवं टंकण प्रतियोगिताएं -** इन प्रतियोगिताओं का आयोजन 16 से 24 सितंबर 2015 के बीच किया गया जिसमें बड़ी संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। राजभाषा का प्रचार-प्रसार करने एवं कर्मचारियों में इसके प्रति रूचि विकसित करने की दृष्टि से ये कार्यक्रम अत्यंत उपयोगी हैं।

संरक्षक
आर. के. गुप्ता
महाप्रबंधक

प्रधान संपादक
ए. के. गुप्त
मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं
मुख्य बिजली इंजीनियर

संपादक
डॉ. वरुण कुमार
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

सह संपादक
ग्रेगोरी तिग्गा
वरिष्ठ अनुवादक
एवं
प्रमोद कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

तकनीकी सलाहकार
मृणाल कांति सिन्हा
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर (कंप्यूटर)

चित्र दीर्घा

15 अगस्त 2015 को पू.रे., मुख्यालय सांस्कृतिक संगठन द्वारा प्रस्तुत डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम के जीवन-वृत्त पर आधारित लघु नाटिका का दृश्य

पूर्व रेलवे में हावड़ा से हुगली तक रेलगाड़ी की प्रथम यात्रा (15.08.1854) की 161वीं वर्षगाँठ के अवसर पर रेल संग्रहालय, हावड़ा में 15 अगस्त 2015 को पू. रे. मुख्यालय सांस्कृतिक संगठन द्वारा प्रस्तुत लघु नाटक